राष्ट्रीय
www.samaylive.com
सच कहने की हिम्मत
सहारा
2.50
राष्ट्रीयता • कर्त्तव्य • समर्पण
वाराणसी। बृहस्पतिवार • 30 अप्रैल • 2015

गरीबी के धागों से बुन रहे बनारस का हुनर

बेशकीमती साड़ियां बनाने वाले मुश्किल से कमा पाते हैं प्रतिदिन मात्र 100 रुपए

अमन/एसएनबी

वाराणसी। शहर के लल्लापुरा में कदम रखते ही आपको करघों की खटर पटर और पावरलूम की आवाज सुनाई देती है। यहां वो बेशकिमती साड़ी तैयार होती है जिसकी चमक से बालीवुड भी अछूता नहीं है। इसके बावजूद इलाके में गरीबी का आलम यह है कि पूरा परिवार मिल कर प्रतिदिन मेहनत करता है तो 2 डालर यानि 100 रुपया ही बमुश्किल कमा पाते हैं। जबकि लल्लापुरा कि पहचान देश ही नहीं, दुनिया भर में हाथ से तैयार बेशकिमती बनारसी साड़ियों से है। आम हो या फिर खास, सबकी पहली पसंद है बनारसी साड़ी।

यूं तो बनारसी साड़ी समूचे बनारस में तैयार होती है मगर हम यहां चर्चा कर रहे हैं लल्लापुरा और उससे जुड़े तकरीबन दर्जन भर मुहल्लों की। जहां का रोज़गार का मुख्य हिस्सा बुनकारी है। सरकारी आंकड़े बताते हैं कि आबादी के 60 फीसद लोग बुनकारी करके अपनी जीविका चलाते हैं। बनारस में साड़ियों के जरिए 70 करोड़ का कारोबार है। लेकिन फिर भी बुनकर अपने खुन पसीने से विकसित इस रवायती काम से नाता तोड़ने को मजबूर है। इसकी वजह बुनकर नेता अब्दुल कादिर अंसारी बताते हैं कि सूत व्यापारियों एवं साड़ी निर्माताओं के लिए 16 से 18 घंटे हथकरघा चलाने वाले बुनकर बिचौलियों के हाथों के शिकार हो गये हैं। शोषण और तंगहाली ने बुनकरों को इतना बेरहम बना दिया है कि वे अपने छोटे-छोटे बच्चों को स्कूल भेजने के बजाय काम में लगा देते हैं ताकि वे भी चार पैसे कमा कर परिवार का सहयोग करें और रवायती हुनर भी सीखते रहें।

लल्लापुरा के इन बुनकरों पर साई इंस्टीट्यूट ऑफ रुरल डेवलपमेंट ने अपने साल भर के शोध 'ए केस स्टडी ऑन लल्लापुरा' में पाया कि समाज के नीचले तपके में बाज़ार बढ़ाया जा सकता है। करीब एक

इस तरह से सुधर सकते हैं बुनकरों के हालात

'ए केस स्टडी ऑन लल्लापुरा' में पाया गया कि समाज के नीचले तपके में बाज़ार बढ़ाया जा सकता है। अगर जो वस्तुए पैदा करते हैं व जो उनकी खपत करते हैं उनके बीच का अंतर इन तरीक़ों से पट जाये:

1-उत्पादकों व उपभोक्ताओं के बीच दूरिया मिट जाये

2-उत्पाद व खपत के बीच समय का अंतर समाप्त हो जाये

3-जो सूचना की खाई है उत्पादकों व उपभोक्ताओं के बीच उत्पाद व मार्केट परिस्थितियों के कारण वो मिट जाये

4-पैसे की कमी यानि उपभोक्ताओं की खरीदने की क्षमता जब कि वो अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की कोशिश कर रहे हो।

साल पहले सूचना एवं सूचना प्रौद्योगिकीय मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से एसआईआरडी और मीडिया लैब एशिया ने 2013 -14 में जब लल्लापुरा में प्रोजेक्ट शुरु किया था तो वहां के बुने उत्पादों का कुल बाज़ार सिर्फ 70 करोड़ रुपये था और हर बुनकर घर औसतन 3 हज़ार रुपये से भी कम प्रति माह की आय पर गुज़ारा कर रहे थे। बुनकर आपूर्ति करने वाले बाज़ार, रिटेल व उपभोक्ताओं के बीच सूचना के तालमेल की कमी से सभी परेशान थे। आपूर्ति करने वाले व मास्टर बुनकर बाज़ार को अपने इशारों पर चलाते थे।

साल भर में ही बदलने लगी स्थिति

नई रिसर्च रिपोर्ट के मुताबिक सिर्फ 1 साल में लल्लापुरा के बुनकरों के परिवार की बच्चियों ने एसआईआरडी से जुड़कर अपने व अपने परिवार की कमाई में इज़ाफा किया है। जिससे उनका कारोबार पहले से बेहतर हुआ है। यह कहना था बुनकर शमा अफरोज़, सबा परवीन का। वो कहती है कि ये सिर्फ एक साल की मेहनत का नतीजा है। जहां किसी वक्त में शिक्षा सिर्फ स्कूलों तक सीमित थी वही आज हर बच्चियां कम्प्यूटर की अच्छी जानकारी के साथ ही अलग-अलग रोज़गार में व्यस्त है। साई इंस्टीट्यूट के अजय सिंह बताते हैं कि हमने लल्लापुरा प्रोजेक्ट के तहत बुनकरों को कम्प्यूटर डिजाइन प्रशिक्षण के साथ-साथ ऑन लाइन बाज़ार भी मुहैया कराया है। कभी लल्लापुरा के लोगों को कम्प्यूटर और इंटरनेट की अहमियत का अंदाज़ा नहीं था, आज वहीं तकरीबन 1000 लोगों को कम्प्यूटर और इंटरनेट के जरिए पूरी दुनिया से जोड़ दिया गया है। कभी बुनकर हाथ से डिजाइन शीट बनाया करते थे लेकिन अब उनकी डिजाइन कम्प्यूटर पर तैयार हो रही है। बुनकर नेता हाजी ओकास अंसारी की माने तो देश भर में टेक्सटाइल से जुड़े कारोबार करने वाले 400 समूह है जिनका कुल कारोबार करीब 60 हज़ार करोड़ से भी ज्यादा है उन्हें कपड़ा मंत्रालय वा सूचना प्रौद्योगिकीय मंत्रालय कम्प्यूटर प्रशिक्षण दे। इस तरह डिजिटलीकरण से उनका राजस्व असानी से दोगुना हो सकता है। सूचना के तालमेल की कमी को भी दूर किया जा सकता है।

वाराणसी
राष्ट्रीय सहारा
www.samaylive.com
वाराणसी। रविवार • 7 जून • 2015

मुश्किलों से दोस्ती कर सपना को किया साकार

अमन/एसएनबी

वाराणसी। समाज में बदलाव ऐसे ही नहीं आता, बल्कि इसके लिए जरूरत होती है मजबूत इरादो, नेक सोच और संघर्ष के लिए तैयार रहने की, जिसके पास इतना है उसे जिन्दगी में कभी हार नहीं मिलती। कुछ ऐसी ही मेहनतकश और नेक इरादा पालने वाली, लल्लापुरा की मेहनाज परवीन हैं, जिन्होंने मुश्किलों से दोस्ती की और आभाव की जिन्दगी को अपनी मेहनत, सच्चाई और नेक इदारों के बूते हरा कर कामयाबी का परचम लहराया।

बलिया रसड़ा की रहने वाली मेहनाज परवीन का विवाह बक्सर बिहार में हुआ था। शुरू में वो गांव में ही रही और उसके शौहर बनारस में कपड़ा सिलाई करके किसी तरह परिवार का पेट पाल रहे थे, जब बात बच्चों की तालीम की आयी तो मेहनाज भी शौहर के पास बनारस आ गयी। यहां महंगाई के चलते किसी तरह जिन्दगी गुजर रही थी, मगर मेहनाज को लग रहा था कि इतने पैसे में कैसे चलेगा घर खर्च और बच्चों की पढ़ायी, इसलिए वो घर में ही कपड़े की सिलाई करने लगी और कुछ नया करने का ख्वाब आंखों में सजाने लगी।

अपने बूते मेहनाज़ ने बदल दिया हवा का रुख, हासिल किया मुकाम

इसी बीच महज दर्जा आठवीं तक तालीमे आफ्ता मेहनाज को किसी से पता चला कि केन्द्र सरकार द्वारा लल्लापुरा में ही संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकीय अधारित महिला सशक्तिकरण एवं समन्वित विकास कार्यक्रम के तहत साई इंस्टीट्यूट मनपसंद कार्य का प्रशिक्षण महिलाओं और युवतियों को दे रहा है फिर क्या था मेहनाज ने भी यहां जाकर ड्रेस डिजाइनिंग, सिलाई, कशीदाकारी, जरी व जरदोजी का काम और बेहतर सीख अपनी काबिलीयत के बूते यह नजीर पेश किया है कि अगर इंसान चाह ले तो बहुत कुछ कर सकता है। आज मेहनाज और उसके परिवार की जिन्दगी पटरी पर आ चुकी है, शौहर को उससे जहां सपोर्ट मिल रहा है वहीं बच्चों को भी मेहनाज अच्छी तालीम दे रही है। आज कम्प्यूटर डिजाइनिंग के चलते मेहनाज की अलग पहचान है। वो कहती हैं कि नयी तकनीक के प्रयोग से आत्म विश्वास बढ़ा है। इस प्रशिक्षण से उसकी क्षमता और गुणवत्ता में निरंतर सुधार हुआ है। साई इंस्टीट्यूट ऑफ रुरल डेवलपमेंट के निदेशक अजय कुमार सिंह कहते हैं कि अल्पसंख्यक समुदाय की युवतियों को निःशुल्क प्रशिक्षण संस्थान में दिया जा रहा है। दर्जा आठवीं तक पढ़ी लिखी मेहनाज ने कुछ महीनों के कोर्स करके ही कम्प्यूटर पर ऐसे डिजाइनिंग कर रही है जैसे कम्प्यूटर से उसका वर्षों पुराना साथ हो। तभी तो कहा गया है कि जब परेशानियों का सामना करने में मजा आने लगे तब मंजिल पर पहुंचने का रोमांच और बढ़ जाता है। इसी से इत्तेफाक रखा मेहनाज ने और दूसरों के लिए मिसाल भी पेश किया।

Project: Varanasi ICT Based Integrated Development Program for Women Empowerment in Lallapura craft cluster of Varanasi – *ICT Based Resource Centre at Lallapura*

Supported by: DeitY under IT for Masses Scheme

Implemented by: Media Lab Asia- New Delhi and Sai Institute of Rural Development (SIRD) - Varanasi

About the Project:

Media Lab Asia is executing the above mentioned project in collaboration with Sai Institute of Rural Development (SIRD). The objective of the project is the empowerment of women in Lallapura craft cluster by deployment of various ICT based solutions/technologies including Chic™ (CAD toll for Craft), Basic Computer Training for computer literacy and multimedia content for health awareness.

Success Stories:

1. **Ms. ShabeenaBano, C 19/214, Lallapura, Varanasi (***unemployed to computer teacher***)**
   Mob. No. 7499742096

Less than a year ago, second of the four children of a father engaged in weaving activities, 22-year-old Shabeenafelt that she was liability on her family.

With her father as the only earning member for a family of six, it was difficult for them to make both ends meet.Despite having a graduate degree, she was not being able to help her family out due to lack of any vocational training.

But this was to change.As she tells, her life changed drastically in the last few months. It was in May 2014 that she came to know about a computer training course being run by the ICT Based Resource Centre (ICTRC)started as a project of DeitY (under IT for masses) not far from her home in the weaver dominated Lallapura area in the heart of the Varanasi city.

After all her queries were answered satisfactorily by people from the implementing agencies Media Lab Asia, New Delhi and Sai Institute of Rural Development (SIRD), Varanasi, she decided to register there. She says that enrolling in the course of Basic Computer Training (BCT) and later taking the training on Chic™ (Cad Tool for Craft) software at the centre proved to be life-changing for her and her family.

From unconfident unemployed women and a 'liability' she evolved into a woman full of confidence, hopes and best of all as a support for her family. Recently, she got a job of a computer teacher at a private school (Basant Public School, Lallapura, Varanasi) and earns a monthly income of Rs 6000. Besides this, with the training in computer aided designing, she is also able to assist her father in producing better designs for weaved clothes in much less time.

She is all praise for the government's initiative and the implementing agencies for choosing to open the centre in Lallapura, where majority of the families are engaged in weaving activities.

“The training I received at ICTRC has not only developed my skills and knowledge but also boosted my self-confidence. I am able to contribute financially to my family. It has totally changed the way I looked at myself. The best thing is that the facility is being provided close to the homes of the communities that lack literacy and awareness,” Shabeena says.

2. **Mrs Mehnaaz Parveen,** E 19, Kamayani colony, Pisachmochan, Lallapura, Varanasi (Mob. 9616468031)

For a class 8 pass mother of two children and having no knowledge of English language, it was not easy to convince herself to learn to use computer. But, the sheer determination of making her life better, giving good education to her children and helping her husband in running the family drove 33-year-old Mehnaaz to do the same.

Every day, after her children would go to school and her husband would engage in his tailoring work, Mehnaaz was left in her home alone. With only basic education, and no training of any sort, Mehnaaz had started to feel depressed at her condition. Despite her willingness to do something to bring a positive change in her family’s life, she could not figure out a way.

The opening of an ICT Based Resource Centre (ICTRC) as part of the central government’s ‘IT for masses’ programme came as ray of hope for her. Soon after she got the information about the centre in Lallapura, she insisted her husband to visit and get information about the courses. The couple found the training course in Chic™ (Cad Tool for Craft) software to be particularly useful for them.

Few days later, she was at the centre with her husband to be registered for basic computer training and the computer aided designing course.

To her delight, the resource persons from the Sai Institute of Rural Development (SIRD), Varanasi(which along with Media Lab Asia, New Delhi, is implementing the project) informed that her unfamiliarity with the English language was no hindrance in using computer. Computer training was provided to her and other enrolled women in Hindi.

Now that she has completed her training on Chic™ (Cad Tool for Craft), she now assists her husband in the tailoring work by providing new and trendy designs in embroidery. She is also passing her knowledge of computer to her children.

It is no wonder that now she is planning to open a designing boutique at her home where she would be able to better utilise the her knowledge of designing with the use of computer software.

“With my training at the ICTR centre, I have got the confidence to open a designing boutique. Presently, I am able to help my husband and educate my children. I am also telling other women in my locality about the centre and the programme. I am sure they will also be able to change their lives with the help of the government’s initiative. I also talk to my relatives and family members with the help of Skype,” she says with a smile.